खेत में पिंगलट (टिड्डा)

ये उन दिनों की बात है जब आजकल की तरह नमक पैकिट में नहीं मिलता था। उन दिनों पहाड़ में रहने वाले क्या सभी जगहों पर लोग डले वाला नमक खाते थे। नमक आता था बाजार से। अजुवा का परिवार भी हर महीने रामनगर बाजार से नमक खरीद लाता था। नमक लाने के लिए चारों बेटों की बारी लगती।

पहले बड़का बेटा, फिर उससे छोटा, फिर उससे छोटा, फिर सबसे छोटा। वे जंगल के रास्ते ऊंचे पहाड़ पार करते और दूर रामनगर बाजार से नमक लाते। वे नमक लाते–लाते ऊब गए थे। एक दिन चारों भाइयों ने आपस में सलाह की कि अब तो नमक लाते–लाते थक गए हैं। क्यों न ऐसा करें कि अपने ही खेत में नमक बो दें? खूब खाद डालेंगे। खूब नमक होगा। हम भी खायेंगे। गांव वाले मांगेंगे तो उनको भी देंगे।

यही सोचकर उन्होंने अपने एक खेत में एक बोरा नमक बो दिया। गांववाले रोकते ही रहे पर वे न माने।

अब वे चारों रोज खेत में यह देखने जाते कि उनका नमक उग आया या नहीं। खेत में देखते–देखते कई दिन बीत गए। लेकिन नमक नहीं उगा। कहीं एक तिनका भी नहीं दिखा। चारों भाई बड़े परेशान हुए। आखिर बोया हुआ नमक गया तो कहां?

एक दिन रोज की तरह सुबह चारों जने खेत में नमक के पौधे देखने की हसरत से पहुंचे। तभी उन्हें खेत में एक टिड्डा दिखाई पड़ा। 'अरे.....वो देखो' सबसे बड़ा भाई बोला– अपना सारा नमक तो यह टिड्डा खा गया। नमक उगेगा कैसे? बाकी तीनों भाई बोले, 'बिलकुल ठीक कहा ददा, चलो इसे मारते हैं।' चारों अपने घर से लाठियां लेकर आये। तय हुआ कि वे बारी–बारी उसपर लाठी चलाएंगे। उन्होंने यही किया। जैसे ही एक ने लट्ठ मारा टिड्डा उछलकर दूसरी जगह जा बैठा। दूसरे ने लट्ठ मारा तो वह तीसरी जगह जा बैठा। तीसरे ने मारा तो चौथी जगह।

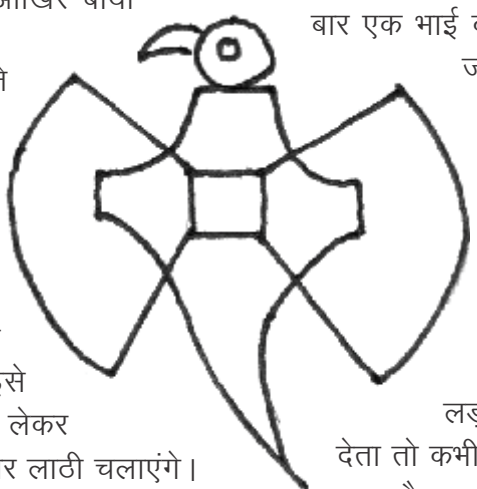

जब एक भी एक भी लाठी उसे नहीं लगी तो वे चारों मिलकर पटापट उसे मारने लगे। इस कोशिश में एक बार एक भाई की लाठी दूसरे के पैर में लग गयी। जवाब में दूसरे ने भी पहले को एक लाठी दे मारी। वे दोनों भाई आपस में गुत्थमगुत्था हो गए। तभी बडके ने कहा, 'जरा रुको रे। लड़ेंगे तो हम चारों लड़ेंगे। आखिर भाई हैं हम चारों।' फिर क्या था। एक भाई दूसरे से भिड गया और तीसरा चौथे से। दोपहर तक वे आपस में कुश्ती लड़ते रहे। कभी कोई किसी को पटक देता तो कभी कोई किसी को। तभी गांव वाले आ गए और उन चारों को छुड़ाकर ले गए।

(अजू कोठारी के बेटों का किस्सा)

''जब–जब शिष्टों का काव्य पंडितों द्वारा बंधकर निश्चेष्ट और संकुचित होगा, तब–तब उसे सजीव और चेतन प्रसार देश की सामान्य जनता के बीच स्वछन्द बहती हुई प्राकृतिक भावधारा से जीवन तत्व ग्रहण करने से ही प्राप्त होगा।''

''जब पंडितों की काव्य भाषा स्थिर हो कर उत्तरोत्तर आगे बढ़ती हुई लोकभाषा से दूर पड जाती है। और जनता के हृदय पर प्रभाव डालने वाली उसकी शक्ति क्षीण होने लगती है तब शिष्ट समुदाय लोकभाषा का सहारा लेकर अपनी काव्य परम्परा में नया जीवन डालता है।''

– आचार्य रामचंद्र शुक्ल